Faculty Name – **Dr. Kavita Sharma (GF JU)**
Department – Ancient Indian History Culture & Archaeology
Class – **M.A. 2nd Semester** (एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर)
Subject – Historiography, Concepts And Methods
(इतिहास –लेखन, धारणाएं तथा पद्धतियां)

–: युनिट 5 :–

इतिहास के प्रमुख सिद्धान्त (Major Theories of History)

इतिहास का तुलनात्मक सिद्धान्त
(Comparative Theoy of History)

प्रारम्भ में इतिहास का स्वरूप कथात्मक था और उसका अध्ययन एक स्वतन्त्र विषय के रूप में किया जाता था, लेकिन समय–समय पर होने वाले परिवर्तनों के फलस्वरूप इतिहास में आलोचनात्मक, अन्वेषणात्मक और तुलनात्मक पद्धति को अपना लिया गया है जिससे इतिहास का स्वरूप पूर्णतः परिवर्तित हो गया है किसी भी वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन केवल तभी सम्भव होता है जब एक ही प्रकार की दो वस्तुएं उपलब्ध हों। इसके अभाव में उनके परस्पर गुण दोषों का अन्तर करना सम्भव नहीं होता है परन्तु इतिहास के सम्बन्ध में तुलनात्मक पद्धति को तभी अपनाया जाता है जब दो समान घटनाएं घटित होती हैं। यदि हम रूस, फ्रांस और अन्य देशों की क्रान्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करें, तब उनके कुछ कारण और निष्कर्षों में समानता का पाया जाना स्वाभाविक है।

इसी सिद्धान्त के आधार पर किन्हीं उन दो देशों की प्रशासनिक व्यवस्थाओं और सैनिक पद्धतियों का भी तुलनात्मक अध्ययन सम्भव है किन्तु शर्त यह है कि उन दो घटनाओं में एक रूपता होनी चाहिए। ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की स्थापना हेतु भी समान घटनाओं, कार्यों, परिस्थितियों और समान प्रणालियों का होना भी आवश्यक है।

वर्तमान युग के कई इतिहासकार तुलनात्मक इतिहास लेखन प्रणाली की ओर उन्मुख है यद्यपि यह कार्य सरल नहीं है। इसके लेखन हेतु विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता होती है। **स्पेंगलर** जैसे विद्वान लेखक ने मानव एकता को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने भिन्न भिन्न संस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद अपने निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है इतिहास की चक्रीय अवधारणा में हिन्दू, अरब, यूनानी रोमन और ईसाई पहलुओं का तुलनात्मक अध्ययन ही इसकी पुष्टि करता है।

Dr Kavita Sharma